Evidence base of diagnosis of Corona Virus...

HINDI VERSION

CORONA

The scandal of the millennium

By Dr. Biswaroop Roy Chowdhury

&

Translated by Rastra Aradhak YouTube Team

Publisher:

India Book of Records

Extraordinary feats... Extraordinary people

...and the treatment of COVID-19

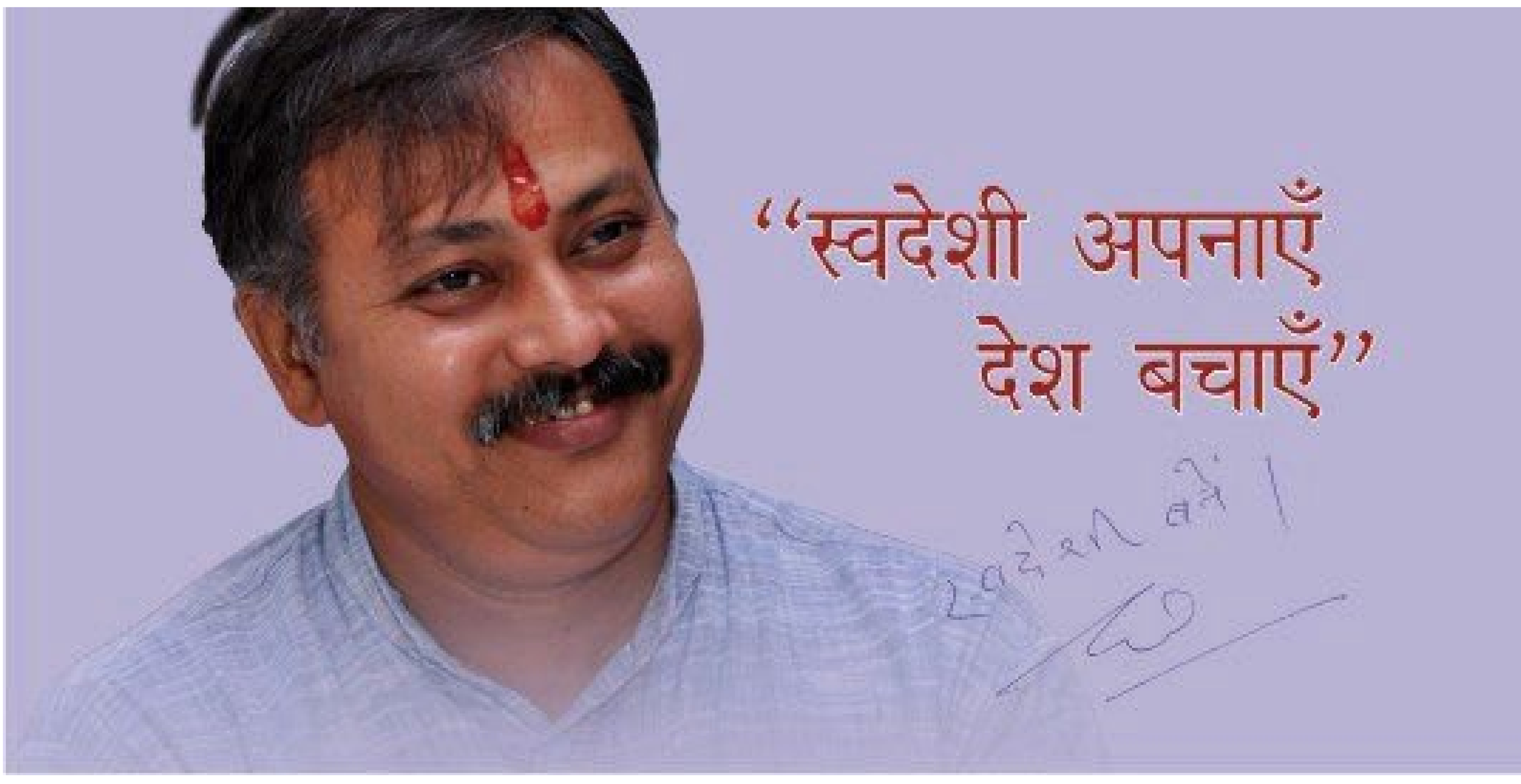

विषय सूची

भाग - 1

कोरोनावायरस के निदान का साक्ष्य आधार और COVID-19 का उपचार.....

NOTE - इस पुस्तक में Corona the scandal of the millennium पुस्तक के केवल कुछ भाग दिए गए हैं। जिन्होंने पहले भाषानुवाद की हुई पुस्तक पढ़ी है वह व्यक्ति पहले पढ़े हुए प्रश्नों को छोड़कर बाकी के प्रश्न पढ़ सकते हैं क्योंकि इस पुस्तक में पहले प्रश्नों के साथ ही अन्य प्रश्नों को जोड़ा गया है।
अगर आप सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययन करना चाहते हैं तो पुस्तक के English Version का अध्ययन कर सकते हैं यहां केवल अत्यंत आवश्यक भागों का ही भाषानुवाद किया गया है।

वन्देमातरम्
भारत माता की जय
राजीव दीक्षित अमर रहें

भाग - 1

कोरोनावायरस के निदान का साक्ष्य आधार और COVID-19 का उपचार

प्रश्न 1 - कोरोनावायरस का आतंक क्यों ? (Projection vs Reality)

फरवरी माह में US Centre for disease Control and Prevention ने कोरोनावायरस के कारण अकेले अमेरिका में इस मौसम में 2 लाखख से 17 लाख मौतें होने की भविष्यवाणी की थी।

इसके विपरीत इस मौसम में अभी तक कुल फ्लू (कोरोनावायरस भी एक फ्लू है) से 20000 से 50000 मौतें हुई हैं जोकि पिछले चार मौसम (2015,2016,2017,2018) से कम हैं-

Flu Hospitalization in U.S.A[1]	
Year	**Number**
2016-2017	500000
2017-2018	800000
2018-2019	500000
2019-2020	525000

यदि हम अमेरिकी मॉडल के अनुसार भारत में गणना करते हैं तो कुल कोरोना मौतें 1 लाख से 70 लाख के बीच होनी चाहिए। जबकि इसके विपरीत COVID-19 से अब तक कुल 488 मौतें (18 अप्रैल तक) हुई हैं। व उनमें से 80% ऐसे लोग थे जिनको एक से ज्यादा बिमारीयां थीं और उनकी औसत आयु 60 वर्ष से ज्यादा थी।

यहां हमें औसत ध्यान में रखना चाहिए कि भारत में जीवन प्रत्यासा 68 वर्ष है -- (स्रोत विश्व बैंक)

इसी प्रकार इस आर्टिकल में आगे आप देखेंगे कि इटली में भी इस मौसम में कोई अतिरिक्त मृत्यु नहीं है। असल में वहां सर्दियों में प्रत्येक वर्ष 85-90% ICU भरे होते हैं।

प्रश्न 2 - COVID-19 / कोरोनावायरस क्या है ?

कोरोनावायरस किसी भी इन्फलूएंजा वायरस की तरह होता है और इसके कारण होने वाली बिमारी को COVID-19 कहा जाता है।
COVID-19 को ILI (Influenza like illness / इन्फलूएंजा जैसी बिमारी) समूह में रखा जा सकता है क्योंकि इसमें इन्फलूएंजा जैसी विशेषताएं हैं:-

- मृत्यु दर लगभग 0.1%
- वायरस का श्वसन मार्ग पर attack
- बुखार खांसी कमजोरी और सांस की तकलीफ जैसे सामान्य लक्षण
- एकल स्ट्रैंड RNA का टुकड़ा
- किसी भी अन्य फ्लू वायरस की तरह हवा या जल में फैलने वाला

प्रश्न 3 - अब प्रश्न उठता है कि हम कैसे पहचानें कि व्यक्ति कोरोनावायरस से संक्रमित है ?

वस इसका केवल एक ही साधन है - RT-PCR जांच (Reverse transcription polymerase chain reaction) जिससे यह पता लगाया जा सकता है कि व्यक्ति कोरोना संक्रमित हैं या नहीं।

जब भी हम कोई मशीन, कार, कैमरा या मोबाइल फोन खरीदते हैं तो उसके साथ एक नियमावली दी जाती है कि आपको इस उत्पाद का यहां और इस तरह से Use करना है।

ठीक उसी प्रकार जब RT-PCR टेस्ट किट खरीदी जाती है तो उसकी नियमावली में स्पष्ट लिखा हुआ मिलता है कि यह किट केवल अनुसंधान अर्थात Research के उद्देश्य से है, जांच के उद्देश्य से नहीं।

"For research use only, not for diagnostic purpose"

इसका बहुत स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि यह किट केवल रिसर्च के उद्देश्य से है जांच के उद्देश्य से नहीं। इस किट के आविष्कारक कैरी मुलिस जोकि इसके नोबल पुरस्कार विजेता हैं उनका भी यही जनादेश है कि यह केवल रिसर्च के उद्देश्य से है जांच के उद्देश्य से नहीं।

यह जांच के उद्देश्य से क्यों नहीं है?

इसका उत्तर यह है कि इस परिक्षण किट की विशिष्टता सबसे अधिक 99% है विशिष्टता का अर्थ है कि यदि 100 स्वस्थ लोगों पर इसका परिक्षण किया जाए तो उनमें से एक व्यक्ति को यह कोरोना से संक्रमित (False-positive) बता ही देगी। यह 18 मार्च 2020 आइसलैंड में सिद्ध हुआ जिसमें 1800 स्वस्थ व्यक्तियों की जांच की गई तो उनमें से 19 लोगों को कोरोना Positive पाया गया यह तब हुआ जब किट पूर्ण क्षमता के साथ कार्य कर रही थी।

यदि हम व्हाइट हाउस में कोरोनावायरस के समन्वयक डॉ ब्रिक्स की सलाह सुनते हैं जिसमें डॉ ब्रिक्स कहते हैं कि किट के गलत होने की 50% संभावना है अर्थात प्रत्येक दूसरा टेस्ट गलत हो सकता है इसके ऐसे बहुत से कारणों से फिनलैंड के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा किट को रिटेक्ट कर दिया गया।

भ्रम को समझने के लिए हमें मेडिकल जर्नल के कुछ पन्नों को पलटना होगा
अमेरिकन जर्नल ऑफ मेडिकल एसोसिएशन ऑफ 27 फरवरी 2020 के अनुसार, वुहान के 4 रोगियों का इस किट के द्वारा परिक्षण किया गया था। अस्पताल से छुट्टी दी जाने से पहले इस किट के द्वारा टेस्ट करने पर उन्हें कोरोना निगेटिव पाया गया था। उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

उसके 13 दिन बाद उसी किट से जांच की गई तो कोरोना पॉजिटिव पाया गया। इसका मतलब है ?

Case 1 - या तो वे पहले कभी कोरोना निगेटिव हुए ही नहीं थे और उन्हें वायरस था।

Case 2 - वे ठीक हो गए थे घर जाने पर दोबारा संक्रमित हो गए।

Case 3 - उनका शरीर कोरोनावायरस मुक्त है किट गलत परिक्षण कर रहा है

इसके अलावा मतलब है कि किसी के साथ कोई निर्णायक जवाब नहीं है।

अब हम 4 मार्च की ओर चलते हैं, The Lancet एक बहुत ही महत्वपूर्ण पत्रिका है इसमें सिंगापुर के एक रोगी की केस स्टडी है। रोगी को तेज बुखार में अस्पताल ले जाया गया जहां उसका डेंगू टेस्ट हुआ, रोगी डेंगू पॉजिटिव पाया गया और डेंगू का इलाज शुरू कर दिया गया।

उसके बाद डॉ ने कोरोना टेस्ट करने का निर्णय लिया और Patient कोरोनावायरस पॉजिटिव भी पाया गय ा। सबाल यह है कि उसे डेंगू रोगी मानेंगे या कोरोनावायरस रोगी ? क्या दोनों मामलों में पॉजिटिव गलत था? सीधे शब्दों में कहें तो यहां भी कोई निर्णायक जवाब नहीं हो सकता।

आइए 5 मार्च की ओर चलते हैं - न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन - US में कोरोनावायरस में आने वाला पहला मरीज-------

एक नमूना उसकी नाक से लिया गया जिसमें वह कोरोनावायरस पॉजिटिव पाया गया व एक नमूना उसका मुंह से लिया गया जिसमें वह कोरोनावायरस निगेटिव पाया गया।
निष्कर्ष आपके ऊपर है मैं केवल इतना कह सकता हूं कि RT-PCR टेस्ट किट के परिक्षण की विश्वसनीयता शून्य है।

यहां तक कि Cochrane Collaboration के संस्थापक पीटर गोट्सज ने 6 मार्च को एक रिपोर्ट ब्रिटिश मेडिकल जर्ना में लिखी उसमें उन्होंने कहा कि वर्तमान से बाहर निकलकर आने का एकमात्र तरीका है वह है पर्यावरण परिक्षण किट को हटाना
यह परीक्षण किट ही सभी समस्याओं का मूल कारण है।
दरअसल मैंने भी एक परीक्षण किट का आविष्कार किया है जिसके द्वारा आप घर बैठे यह निर्धारित कर सकते हैं कि आप कोरोना रोगी हैं या नहीं। क्या आपकी रूचि है ?
इस परिक्षण के लिए केवल 15 सेकण्ड की आवश्यकता है ताकि यह पता लगाया जा सके कि आप कोरोना रोगी हैं या नहीं। आपके 15 सेकण्ड अब शुरू होते हैं
अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बो अस्सी नब्बे पूरे सो, सो में निकला धागा चोर निकल के भागा।
अंतिम अंगुली आपकी ओर इशारा कर रही है

अगर अन्तिम अंगुली आप पर रूकती है तो आप कोरोना रोगी हैं। अगर आप 10 लोगों में कोरोना रोगी का पता लगाना चाहते हैं तो बहुत सरल है इस गिनती की शैली को याद करें और अंगुली जहां भी रूके समझें वही व्यक्ति रोगी है।

आप कहेंगे कि यह एक बड़ा मजाक है। यह एक फ्लूक है आप किसमें विश्वास करेंगे - विज्ञान या फ्लूक ?

क्या है विज्ञान का अर्थ - निर्माता का मैनुअल या आविष्कारक? सभी मेडिकल जर्नल?
विज्ञान ऐसा कह रहा है कि यह किट अतार्किक, अवैध और अपराध है। इस परीक्षण किट की अनुसंशा कौन कर रहा है ?
केवल एक संगठन इसकी अनुसंशा कर रहा है वह है WHO जोकि 10 साल पहले PACE
(Parliamentary assembly of council of Europe)
द्वारा लूटेरा घोषित किया गया था। याद कीजिए लगभग 10-11 साल पहले इसी प्रकार की स्थिति थी तब खलनायक H1N1 महामारी थी। कुछ महीनों बाद WHO के निदेशक ने एक बड़े घोटाले के रहस्यों का खुलासा किया। ऐसे संगठन की किसी भी सलाह का पालन करना पाप है।

प्रश्न 4 - सबाल यह है कि अगर यह एक घोटाला है तो दुनिया में इतने लोग क्यों मर रहे हैं?

इटली में 2 माह में 11500 (31 मार्च तक) लोग मर चुके हैं। क्या आप मीडिया का समर्थन करेंगे या इटली के स्वास्थ्य मंत्रालय का ? कल मैं इटली के लोगों के सम्पर्क में था ताकि इटली की वास्तविक स्थिति का पता चल सके।
इसके अलावा, 20 मार्च 2020 को नेशनल हेल्थ इंस्टीट्यूट ऑफ इटली की रिपोर्ट में कहा गया कि 48.6% लोगों में कोरोना के अलावा 3 अन्य बिमारीयां थीं, 26.6% लोगों में कोरोना के अलावा 2 अन्य बिमारीयां थीं, 23.5% लोगों में कोरोना के अलावा 1 अन्य बिमारी थी, केवल 1.2% लोगों में कोरोना था। अगर हम NHI की रिपोर्ट के अनुसार, मरीजों के मृत्यु प्रमाण पत्र पर एक नजर डालें तो केवल 12% लोगों की मृत्यु कोरोनावायरस से हुई थी। वास्तव में केवल 1380 लोगों ने कोरोनावायरस के कारण दम तोड़ा।
यहां कोरोना के साथ मरने में या कोरोना से मरने में एक अन्तर है, उनका मतलब है कोरोनावायरस के कारण केवल 12% लोग मारे गए बाकि किसी अन्य बिमारी से मर गए।

यदि आप अभी तक आश्वस्त नहीं हैं तो कृपया Euromomo.eu वेवसाइट पर जाएं, जहां आपको यूरोप के भीतर पिछले 5 वर्ष की मृत्यु दर के आंकड़े मिलेंगे। आप पिछले 5 वर्षों के दौरान इटली या किसी अन्य देश की मृत्यु दर के आंकड़े देख सकते हैं।

अन्तर केवल इतना है कि इस बार प्रत्येक मौत का आंकड़ा वास्तविक समय में मीडिया के द्वारा दिखाया गया और घबराहट पैदा हुई।

सवाल ये बनता है कि इस स्थिति में करना क्या है, मीडिया क्या कह रही है, जनता क्या कह रही है? आपके पास विकल्प है।

दरअसल यूके सरकार ने 19 जनवरी को एक बयान जारी किया कि संयुक्त राज्य अमेरिका में कोरोनावायरस से 22 लाख और यूके में 5 लाख मौतें होंगी। कोरोनावायरस को HCID (उच्च परिणाम संक्रामक रोग) का दर्जा दिया गया था। अब 2 महीने बाद, दुनिया भर के परिणामों के संकलन के बाद यूके सरकार ने महसूस किया है कि कोरोनावायरस एक साधारण फ्लू वायरस है और इसका इलाज किसी भी अस्पताल या क्लीनिक में किया जा सकता है।

चुपचाप 19 जनवरी को उन्होंने कोरोनावायरस को HCID से हटा दिया और सामान्य वायरस में डाल दिया। लेकिन उन्होंने इस तथ्य को सार्वजनिक कर सोसल मीडिया से छिपा दिया। इसलिए मैंने 28 तारीख को एक वीडियो बनाया

और आप सभी तक पहुंचाया कि वे कोरोनावायरस महामारी के बारे में गलत थे। और आज आपकी मदद से यह रिपोर्ट हर घर तक पहुंच गई है। 26 मार्च को लैंसेट रिसर्च पेपर में ओन ने बताया कि कोरोनावायरस इतना खतरनाक नहीं है जितना अपेक्षित था और मृत्यु दर 0.1% है जो किसी भी सामान्य फ्लू के मामले में बराबर है।

प्रश्न 5 - CDC 2019 नोवल कोरोनावायरस की स्थिति - RT-PCR डायग्नोस्टिक पैनल 30 मार्च 2020 वास्तविक समय तक।

- वायरल RNA का पता लगाना संक्रामक वायरस की उपस्थिति का संकेत नहीं हो सकता है COVID-19 परीक्षण लक्षणों हेतु प्रेरक एजेंट है।
- व्यापकता कम होने पर false-positive संभावना अधिक होती है।
- COVID-19 संक्रमण की उपचार निगरानी के लिए इस परीक्षण का प्रदर्शन स्थापित नहीं किया गया है।

प्रश्न 6 - कोरोनावायरस बनाम फ्लू

COVID-19 नए कोरोनावायरस के कारण दुनिया भर में 454000 से अधिक बिमार और 20550 से ज्यादा मृत्यु हो चुकी हैं। CDC के अनुसार फ्लू की तुलना के लिए केवल अमेरिका में 3 करोड़ 80 लाख बिमार व इस मौसम में 390000 अस्पताल गए

और 23000 से ज्यादा मौतें (25 मार्च तक) हो चुकी हैं।

COVID-19 और फ्लू की मृत्यु दर 0.1% है

कोरोनावायरस का $R_0 = 2.2$ तथा फ्लू का $R_0 = 1.3$ है

यहां हमें याद रखना चाहिए कि R_0 वायरस की आन्तरिक विशेषता नहीं है। इसे रोकथाम, शमन और अंततः "Herd immunity" के द्वारा कम किया जा सकता है, क्योंकि जो लोग ठीक हुए हैं वे संक्रमण या गंभीर बिमारीयों के लिए कम संवेदनशील होते हैं।

उपरोक्त तथ्यों और आंकड़ों के आधार पर यहां बताया गया है कि किस प्रकार मृत्यु दर और संचय दर (R_0) की तुलना अन्य विषाणुओं से करता है।

Reference [26]

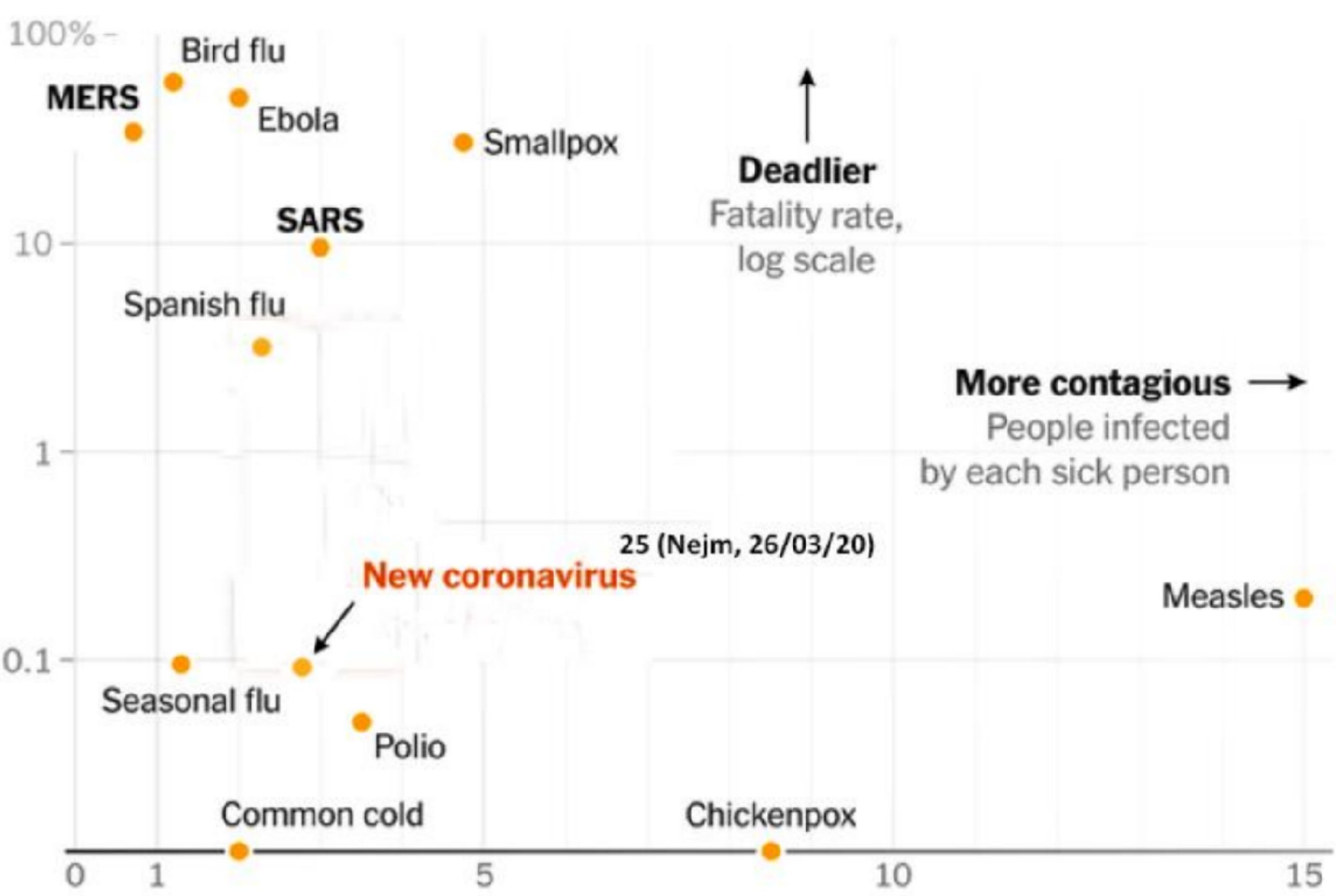

लक्षण:- कोरोना VS फ्लू

नए कोरोनावायरस पर मौसमी फ्लू कई मायनों में समान हैं। दोनों श्वसन रोग हैं जो संक्रमित व्यक्ति के मुंह और नाक से तरल पदार्थ की बूंदों के माध्यम से फैलते हैं। दोनों संक्रामक हैं और बुखार, खांसी, मांसपेशियों में दर्द, कमजोरी जैसे समान लक्षण पैदा करते हैं वो बुजुर्गों पर विशेष रूप से ज्यादा प्रभावी होते हैं।

अन्तर --

1 - वे वायरस के विभिन्न परिवार से आते हैं।

2 - लोगों को फ्लू वायरस से अधिक सुरक्षा है क्योंकि वे हर साल बार-बार फ्लू वायरस के सम्पर्क में आते रहते हैं।

प्रश्न 7 - ब्रिटेन में प्रति वर्ष फ्लू की मौत के आंकड़े

वर्ष-दर-वर्ष को देखते हुए, वर्तमान में मौतों की संख्या पांच-वर्षीय औसत से कम है। वर्तमान मौतों की संख्या 150,047 है, जोकि पांच वर्ष के औसत से 3,350 कम है। 27 मार्च 2020 तक पंजीकृत मौतों में से 647 मौतों में मृत्यु प्रमाणपत्र पर कोरोनवायरस (COVID-19) का उल्लेख है; यह सभी मौतों का 0.4% है।

प्रश्न - 8 - WHO की RT-PCR परिक्षण की सिफारिश

WHO ने कोरोना वायरस की जांच करने के लिए RT-PCR परीक्षण का उपयोग करने की सिफारिश की है।

3 बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 9 - दुनिया भर में COVID-19 की बजह से एक भी अतिरिक्त मौत नहीं हुई ?

उपरोक्त डेटा को हम सरकारी वेबसाइट से सीधे देखकर हम संबंध देख सकते हैं कि अमेरिका या इटली में इस मौसम में कोई अधिक मृत्युदर नहीं है और वास्तव में यह ब्रिटेन के मामले में पांच साल के औसत से कम है। इसी तरह की प्रवृत्ति सभी यूरोपीय देशों में EUROMOMO.EU के माध्यम से देखी जा सकती है। भारत में हर साल सांस की तकलीफ (इन्फ्लुएंजा जैसी बिमारी) से लगभग 3,50000 लोग मारते हैं यानी (ILI) इन्फ्लूएंजा जैसी बिमारी के कारण हर दिन नियमित रूप से 1000 मौतें होती हैं। अब यदि आप COVID-19 रोगियों की अब तक की कुल मौतों की तुलना करते हैं (प्रत्येक मृत्यु कोरोना के कारण नहीं है, यह दवाओं के दुष्प्रभावों के कारण हो सकती है, जैसा कि नीचे बताया गया है), यह ILI के कारण हुई कुल मौतों का मात्र एक अंश है।

प्रश्न 10 - कोरोनावायरस को लॉक-डाउन से रोकना असंभव है क्योंकि...

1 - कोरोना वायरस के 80% वाहक स्पर्शोन्मुख हैं इसलिए वर्तमान थर्मल स्क्रीनिंग विधि के माध्यम से पता नहीं लगाया जा सकता, शुरू में हवाई अड्डे पर कार्यरय और बाद में मुहल्लों में आदि...

2 - लक्षण दिखने वाले COVID रोगियों में से 57% को बुखार नहीं है।

3 - वर्तमान थर्मल स्कैनर 4°F की स्वीकार्य त्रुटि के साथ औद्योगिक थर्मल स्कैनर के साथ उपयोग में लाया जाता है।

यदि हम उपरोक्त तीन बिंदुओं को जोड़ते हैं तो इनका निष्कर्ष निकालता है कि 95% कोरोना वाहक का जनवरी २०२० के अंतिम सप्ताह तक कार्य करने वाली वर्तमान स्क्रीनिंग रणनीति से कभी पता नहीं लगाया जा सकता है। इसलिए लॉकडाउन के बावजूद फल-सब्जियों जैसी आवश्यक सेवाओं के माध्यम से वायरस सक्रिय रूप से फैल सकता है। ऑक्सफोर्ड मॉडल के अनुसार, लॉकडाउन के बावजूद ब्रिटेन की 50% आबादी पहले से ही संक्रमित है, जिससे "Herd immunity" विकसित हो रही है जो अंत में कोरोना वायरस से होने वाली मौतों से सुरक्षा प्रदान करेगी। यही स्थिति भारत के लिए भी मानी जा सकती है।

प्रश्न 11 - यदि कोरोना नहीं है तो COVID-19 के रोगियों के मरने का क्या कारण है ?

जवाब पाने के लिए हमें 100 साल पीछे जाना होगा। वर्ष 1920 में H1N1 स्पैनिश फ्लू दुनिया का सबसे बुरा फ्लू प्रकोप था जिसमें 10 करोड़ लोग मारे गए थे, जोकि उस समय की कुल विश्व जनसंख्या का लगभग 5% था। इनमें 1 करोड़ 80 लाख भारतीय थे। ऐसा माना जाता था कि वायरस करोड़ों लोगों को मारने के लिए बहुत मजबूत, घातक और खतरनाक था। लेकिन अब चिकित्सा विज्ञान बहुत स्पष्ट है कि मौतों का वास्तविक कारण वायरस नहीं था, बल्कि कुछ अन्य कारण थे। जिसका अर्थ है कि 1918-1920 के बीच, जब भी कोई फ्लू की चपेट में आया, उस व्यक्ति को ताजी हवा, धूप और प्रर्याप्त पोषण के बिना अस्पताल में एक तंग कमरे में डंप किया गया, जोकि मौत का कारण था। उस समय, दुनिया में बहुत कम अस्पताल थे जिन्हें 'ओपन एयर हॉस्पिटल्स' का नाम दिया गया था। इसका मतलब यह था कि मरीज को ताजी हवा में रखा गया था और उसे धूप भी दी गई थी और ये मरीज ऐसे अस्पतालों से ठीक होकर बाहर चले गए थे। इसलिए यदि हम उस उदाहरण को लेकर वर्तमान संदर्भ के साथ तुलना करते हैं, तो मान लीजिए अगर किसी व्यक्ति में कोरोना वायरस पाया गया है, तो उस व्यक्ति को पूरे इसी तरह से Quarantine कर दिया जाता है

कि व्यक्ति ताजी हवा और सूरज की रोशनी से कट जाता है। इसके अलावा भोजन संसाधित और पैक किया हुआ दिया जाता है या इस तरह से पकाया जाता है कि व्यक्ति अपना पेट भर सकता है लेकिन पोषण लगभग नगण्य है। ऐसी स्थिति में रोगी को ठीक होने में ज्यादा समय लगता है। इसके अलावा, यदि मरीज गुर्दे की विफलता, मधुमेह, हृदय रोग या उच्च रक्तचाप जैसी अन्य बीमारियों से पीड़ित है और एंटीबायोटिक के साथ मलेरिया रोधी दवा दी जाती है, पिछले 40 वर्षों के परिणामों में इन 2 दवाओं के संयोजन को खतरनाक रूप से दिल की धडकन बढने के रूप में देखा गया है। और अचानक हृदय मृत्यु का कारण बनती है। यह जर्नल ऑफ अमेरिकन मेडिकल एसोसिएशन के 27 मार्च के शोध पत्र में देखा गया है, जिसके अनुसार मृत्यु का कारण मायोकार्डियल की चोट है, जिसका अर्थ है दिल में चोट। यह 1/3 रोगियों में होता है। इसका मतलब स्पष्ट है कि इसका कारण कोरोनोवायरस है या कोरोनावायरस का उपचार।

साथ ही हमने अपने आप को ठीक होने की तलाश में ताजी हवा और धूप से काट लिया है। याद रखें, ताजी हवा और सूरज की रोशनी भगवान की ओर से हमारे लिए 2 अनमोल उपहार हैं और एंटीवायरल हैं। इतना ही नहीं, ये 2 हमारी प्रतिरक्षा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जहां भी लॉकडाउन होता है, वहां लोग ब्लड शुगर, ब्लड प्रेशर, वजन की समस्या और अवसाद से पीड़ित होते हैं। अवसाद की दर बढ़ी है। मतलब कि लॉक डाउन प्रोटोकॉल की वजह से लोग बीमार पड़ रहे हैं। घर में ताला लगने के अपने खतरे हैं। कम से कम 1/3 लोग अपनी नौकरी खोने की चिंता कर रहे हैं। इकोनॉमिक टाइम्स का कहना है कि 30% भारतीय आबादी अपनी नौकरी खोने की कगार पर है, ऐसी स्थिति में, अवसाद ने पहले ही अपनी नौकरी खोने के डर से ऊपर और ऊपर सेट कर दिया है। यह एक खतरनाक स्थिति है। इसलिए समय की जरूरत है कि इस स्थिति से खुद को सही तरह के ज्ञान के साथ सशक्त बनाकर सामने आएं।

प्रश्न 12 - लॉकडाउन बनाम बगैर लॉकडाउन

इस दुनिया में दुश्मन से निपटने के केवल 2 तरीके हैं। 1. रक्षा और 2. अपराध।

रक्षा का अर्थ है स्वयं की रक्षा करना, कवच में रहना या छिपे रहना जब तक कि दुश्मन भाग न जाए या मर न जाए।

2. अपराध का अर्थ है अन्त में दुश्मन पर आपके द्वारा हमला करना। आज हमारा दुश्मन कोरोनावायरस है। यहाँ भी रक्षा और अपराध दो रणनीतियाँ हैं। इस संसार में 90% दुनिया पहली रणनीति पर है जोकि रक्षा अर्थात लॉकडाउन है।

LOCKDOWN द्वारा हम क्या प्राप्त कर रहे हैं? हम रक्षा के रूप में, कोरोनावायरस से खुद को बचा रहे हैं, ताकि यह हम पर हमला न कर सके और हम ऐसा तब तक करते रहेंगे जब तक यह या तो गायब नहीं हो जाता या मर नहीं जाता है।

आज दुनिया के 21 देश अर्थात 10% देश ऐसे हैं जिनमें कोरोना एक ही समय में आया था और उन्होंने दूसरी रणनीति-अपराध का पालन करने के बारे में सही सोचा था, हमले की रणनीति, जिसे HERD IMMUNITY के नाम से जाना जाता है।

कोरोनावायरस से लड़ने के 2 तरीके हैं। एक है Lockdown और दूसरा है No Lockdown.
स्पेन, इटली, यूएस, यूके, भारत या चीन ने लॉकडाउन के लगाकर जो हासिल किया है, उसके बारे में आपके पास सभी आंकड़े हैं। इन सभी देशों में उन्होंने रक्षा के माध्यम से जीतने के बारे में सोचा कि हम खुद को लॉक करते हैं जबकि कोरोनोवायरस प्रतीक्षा कर रहा है, थक जाता है और भाग जाता है।

इसके साथ कितने लोग पीड़ित या मारे गए?
मैं आंकड़े उपलब्ध नहीं करा रहा हूं क्योंकि यह सब इस समय टीवी पर आ रहा है। शायद आपने अब तक याद भी कर लिया होगा।

लेकिन विश्व में 21 देश ऐसे हैं जिनमें लॉक-डाउन नहीं है आप उनकी दूसरी रणनीति के पालन को देखकर आश्चर्यचकित रह जाओगे

NO LOCKDOWN			
Country	Corona Death	Country	Corona Death
Bhutan	0	Sweden	990
Maldives	0	Equatorial Guinea	0
Brunei	1	Zambia	2
Iceland	8	Cambodia	0
Latvia	5	Taiwan	6
Jamaica	4	Belarus	33
Guyana	6	Japan	143
Uruguay	8	Hong Kong	4
St Vincent Grenadines	0	Singapore	9
Belize	2	Macao	0
Cameroon	12		

वे मृत्यु के आंकड़ों में दोहरे अंकों तक भी नहीं पहुंचे यदि आप ध्यान से लिस्ट देखेंगे तो आपको जापान और स्वीडन दो देश दिखेंगे जहां मृत्यु तीनों अंकों तक पहुंच गई। यह पता लगाने पर कि इन दो देशों में इतनी कम मृत्यु क्यों हुई तो मैंने अपनी जांच के अंत में पाया कि इन्होंने Herd immunity का पालन किया।

आपको यह समझना होगा कि जब कोरोनोवायरस शरीर में प्रवेश करता है, तो हम COVID-19 से पीड़ित हो जाते हैं।

COVID-19 इन्फ्लुएंजा श्रेणी के अन्तर्गत गिरता है - ILI श्रेणी जिसमें H1N1 भी गिरता है। हर साल दुनिया भर जापान, अमेरिका और भारत में हज़ारों लोग इसकी वजह से मरते हैं। इन्फ्लूएंजा के कारण कितनी मौतें हुईं यह पता लगाने के लिए मैंने जापान में पिछले 6 वर्षों का अध्ययन किया है।

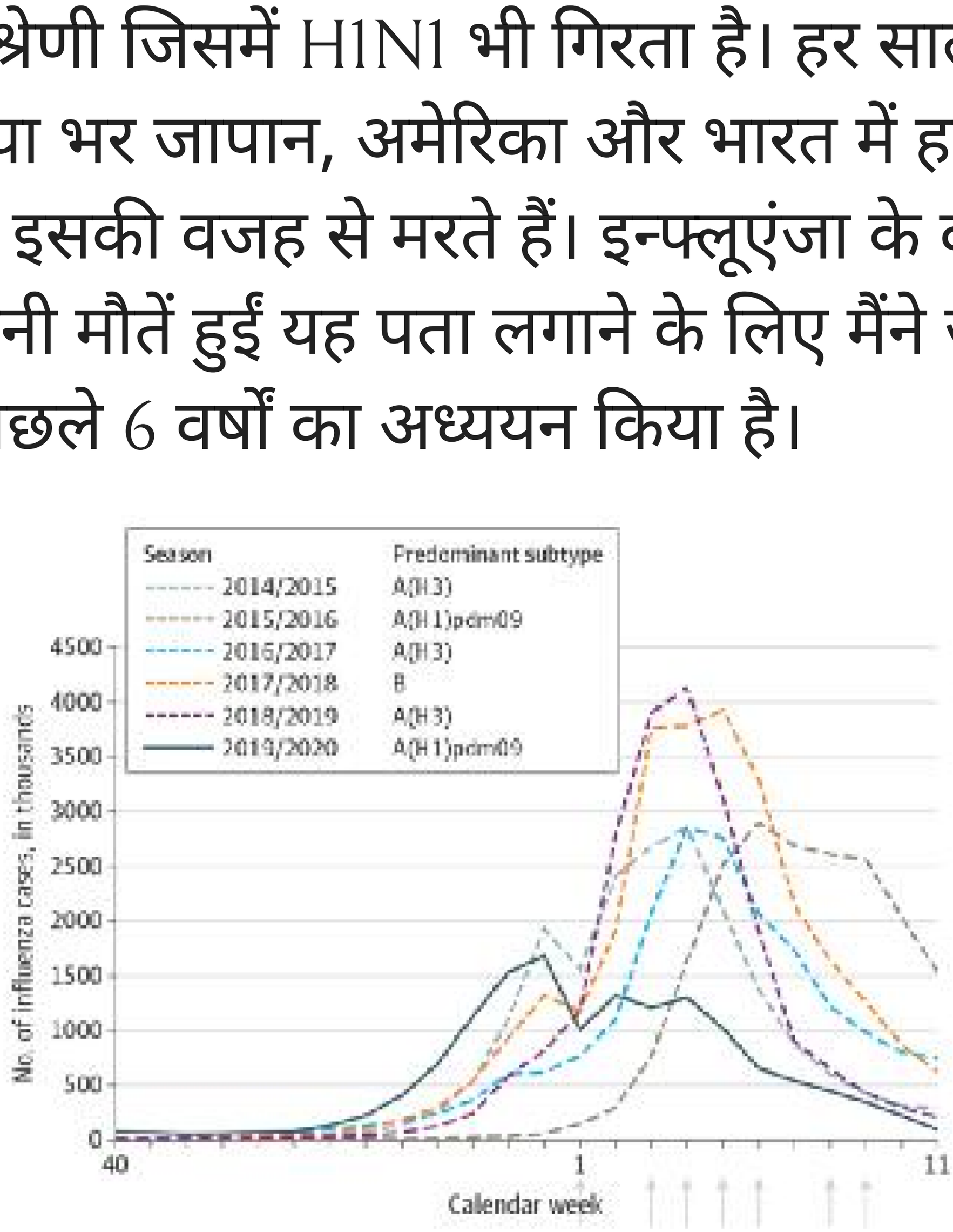

जहां इन्फ्लूएंजा का मौसम नवंबर-अप्रैल, 2015-16, 2016-17, 2017-18, 2018-19, 2019-20 से 10 अप्रैल तक होता है, सन् 2014-15 में मैंने यह विश्लेषण करने की कोशिश की है कि इन्फ्लूएंजा जैसी बिमारी के कारण कितनी मौतें हुई हैं। सभी डेटा बिंदीदार लाइनों के बीच स्क्रीन पर है। पिछले 5 वर्षों की तुलना में इस वर्ष मृत्यु बहुत कम हुई है। यह जापान की कहानी है।

अब बात करते हैं स्वीडन की। मैंने स्वीडन की कुल मृत्यु दर का अध्ययन किया है और आप इसे स्क्रीन पर पा सकते हैं।

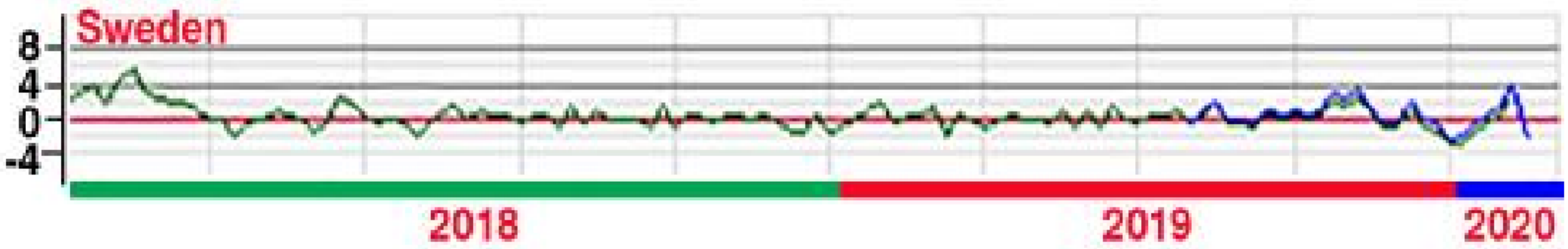

यदि आप स्क्रीन पर ग्राफ को ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे कि कोरोना के कारण मृत्यु अधिक है, लेकिन यदि आप पिछले वर्ष और उससे पहले के आंकड़ों की तुलना करते हैं तो आप देखेंगे कि इन्फ्लूएंजा के कारण होने वाली मौतें कोरोना मौतों से अधिक हैं। स्वीडन और जापान में आंकड़े 3 अंकों को पार कर चुके हैं लेकिन अगर हम पिछले वर्षों की तुलना करें तो जापान और स्वीडन की आज की स्थिति काफी बेहतर है। कहने का मतलब यह है कि जिन देशों में कोरोनावायरस की लड़ाई को जीतने के लिए लॉक-डाउन लगाया गया था उनकी अपेक्षा लॉक-डाउन नहीं लगाने वाले 21 देशों में स्थिति बेहतर है।

अब मैं पूछना चाहता हूं कि इन 21 देशों के बारे में मीडिया में कोई कहानी क्यों नहीं चल रही है?
मैंने इसका जवाब तलाशने की कोशिश की। यहाँ एक कहानी है। सोचिए कि हर साल की तरह इस साल भी आम का सीजन देखने को मिलेगा। लोग आम के पेड़ों पर चढ़ेंगे और आमों को तोड़कर खाएंगे। हालाँकि कुछ लोग आमों को तोड़ते समय पेड़ों से गिर जाते हैं। तब प्रशासन में यह अफवाह फैलती है कि इस साल आमों की असामान्य फसल हुई है, अगर उन आमों को खाया जाए तो शायद लोगों की मौत हो जाएगी। इसका मतलब है कि आम का मौसम खत्म होने तक सभी को बाहर नहीं निकलने की चेतावनी दी गई है। आप आम के लिए तरस रहे हैं इसलिए प्रशासन ने कहा कि हम आपको आम प्रदान करेंगे। उन्होंने बोतलों को (आम का जूस निकालकर) इस तरह से भरना शुरू कर दिया, ताकि आपको अधिक से अधिक आम मिल सकें। इस आम के जूस में कई घातक रसायन होते हैं। एक तरफ आम भगवान का उपहार है। और दूसरी ओर यहाँ आम का जूस है। यह 100% प्राकृतिक हो सकता है फिर भी आम के बराबर नहीं हो सकता।

आइए हम टीके के संदर्भ में बात करते हैं। उन 21 देशों को कोरोना वायरस के खिलाफ अपनी Herd immunity बढ़ाने के लिए न तो किसी दवा की जरूरत थी और न ही टीके की।

अब मैं पूछना चाहता हूं कि इन 21 देशों के बारे में मीडिया में कोई कहानी क्यों नहीं चल रही है?
मैंने इसका जवाब तलाशने की कोशिश की। यहाँ एक कहानी है। सोचिए कि हर साल की तरह इस साल भी आम का सीजन देखने को मिलेगा। लोग आम के पेड़ों पर चढ़ेंगे और आमों को तोड़कर खाएंगे। हालाँकि कुछ लोग आमों को तोड़ते समय पेड़ों से गिर जाते हैं। तब प्रशासन में यह अफवाह फैलती है कि इस साल आमों की असामान्य फसल हुई है, अगर उन आमों को खाया जाए तो शायद लोगों की मौत हो जाएगी। इसका मतलब है कि आम का मौसम खत्म होने तक सभी को बाहर नहीं निकलने की चेतावनी दी गई है। आप आम के लिए तरस रहे हैं इसलिए प्रशासन ने कहा कि हम आपको आम प्रदान करेंगे। उन्होंने बोतलों को (आम का जूस निकालकर) इस तरह से भरना शुरू कर दिया, ताकि आपको अधिक से अधिक आम मिल सकें। इस आम के जूस में कई घातक रसायन होते हैं। एक तरफ आम भगवान का उपहार है। और दूसरी ओर यहाँ आम का जूस है। यह 100% प्राकृतिक हो सकता है फिर भी आम के बराबर नहीं हो सकता।

आइए हम टीके के संदर्भ में बात करते हैं। उन 21 देशों को कोरोना वायरस के खिलाफ अपनी Herd immunity बढ़ाने के लिए न तो किसी दवा की जरूरत थी और न ही टीके की।

टीका क्या है?

एक उदाहरण से समझाता हूं। आइए हम मान लें कि यह कोरोनोवायरस है और जब यह शरीर में प्रवेश करेगा, तो याद रखें कि हर कोई बीमार नहीं पड़ेगा। आंकड़े बताते हैं कि कोरोनावायरस के कारण 80% लोग बीमार नहीं पड़ेंगे। उन्हें यह भी पता नहीं होगा कि वे कोरोनोवायरस के वाहक हैं। केवल 20% लोग बीमार पड़ते हैं। यहां तक कि उनमें से 10% को बुखार है और अन्य 10% में खांसी होती है और ये तेजी से ठीक हो जाते हैं। उन 10% में से अन्य 10% (अर्थात केवल 1 व्यक्ति) जिन्हें बुखार था, वे मर जाएंगे और अन्य 999 ठीक हो जाएंगे। मैं क्या कहना चाहता हूं कि जब कोरोनोवायरस आपके शरीर में नाक, मुंह या संपर्क के माध्यम से प्रवेश करता है, तो 80% लोगों को पता भी नहीं लगता । कुछ ही लोगों को पता चलता है और वे जल्द ही ठीक हो जाते हैं। आपको जो लाभ होगा वह यह है कि आपका शरीर कोरोनोवायरस से लड़ने के लिए प्रतिरक्षा या एंटीवायरस विकसित करता है ताकि अगली बार जब यह आपके शरीर में प्रवेश करे तो आपका शरीर लड़ने के लिए बेहतर स्थिति में होगा। इसे प्राकृतिक टीकाकरण के रूप में जाना जाता है। इसे फार्मा कंपनीयां वैक्सीन के माध्यम से हासिल करना चाहती हैं। वे चाहते हैं कि आप लॉक रहें क्योंकि बाहर एक वायरस है जो आपको मार देगा।

लेकिन फिर वे एक बोतल में वायरस डालकर आपके लिए वैक्सीन तैयार करेंगे और फिर इस वायरस को आपके शरीर में डाल देंगे और शरीर वायरस से लड़कर Immunity विकसित करेगा।

यह टीका 21 देशों द्वारा नहीं खरीदा जा रहा है क्योंकि उनकी Herd immunity पहले से ही विकसित हो चुकी है। यदि कोरोना के कारण मृत्यु होती है तो महामारी होगी और लाखों लोग मारे गए होंगे। सौभाग्य से ऐसा नहीं हुआ।

भारत के बारे में बात करते हैं! भारत में लॉकडाउन को 25 मार्च 2020 से लागू किया गया है। चलिए जनवरी 2020 में वापस लौटते हैं, और इस काल्पनिक स्थिति पर विचार करते हैं। कल्पना कीजिए कि आपको पूरे देश को सुरक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी दी गई है और आप सतर्क हैं कि लूटेने और आक्रमण करने वाले किसी भी शत्रु को अपने देश में प्रवेश न करने दें। और आपके पास पूरी दुनिया में जासूस हैं और आप पूरे राष्ट्र के सुरक्षा प्रभारी हैं। आपके जासूस आपको सूचित करते हैं कि तस्कर दुनिया के विभिन्न हिस्सों से प्रवेश करने वाले हैं और पूरे देश को खा जाएंगे। आपको देश को बचाना है इसलिए आप पूछें कि मैं उन्हें कैसे पहचानूंगा। जासूस आपको बताते हैं कि तस्कर सामान्य नागरिकों की तरह ही दिखते हैं और आसानी से देखे नहीं जा सकते।

आप पूछेंगे कि यदि मैं उन्हें पहचान नहीं सकता तो उन्हें पकड़ूंगा कैसे? वे आपको बताते हैं कि कुछ तस्करों के पास मूंछें हैं।

आप एक विचार प्राप्त करें कि हम तस्करों को मूंछों के साथ पकड़ सकते हैं। तो आप पूछिए कि कितने तस्करों की मूंछें हैं। जासूस आपको बताता है कि उनमें से 10% में मूंछें और 90% में मूंछें नहीं हैं। तो आप कम से कम 10% इन तस्करों को पकड़ने का मन बनाते हैं। इसलिए आप हवाई अड्डे और अन्य बंदरगाहों पर एक उच्च चेतावनी देते हैं और घोषणा करते हैं कि मूंछों वाले किसी भी यात्री को हिरासत में लिया जाना चाहिए और स्कैन किया जाना चाहिए और उचित जांच के बाद ही जाने देना चाहिए। क्योंकि हो सकता है कि वे तस्कर हों! इसके अलावा आप अपने सुरक्षा गार्डों को विशेष चश्मा देते हैं जिसके माध्यम से मूंछों वाले किसी भी यात्री को और आसानी से देखा जा सकता है। लेकिन दुर्भाग्य से चश्मा इतनी बुरी स्थिति में था कि मूंछों वाले यात्रियों को बिल्कुल भी नहीं देख सकता था। तो तस्करों ने फिर भी देश में प्रवेश किया जब आप हाई अलर्ट पर थे हवाई अड्डे को पार किया और देश में प्रवेश किया और पूरे देश में तोड़फोड़ की।

अब यह उदाहरण आज के संदर्भ में संबंधित हो सकता है। यहां के तस्कर कोरोना वायरस के वाहक हैं न कि मरीज। मैंने आपको बताया कि 80% लोग इसके बारे में जाने बिना भी वायरस के वाहक हैं। और यहाँ के ग्लास 'थर्मल स्कैनर्स' हैं, जिसका मतलब है कि इस थर्मल स्कैनर से केवल जिनका तापमान अधिक है उन 10% लोगों का ही पता लगाया जा सकता है। पिछले हफ्ते जनवरी में इन थर्मल स्कैनर का इस्तेमाल हवाई अड्डों पर विदेशों से आने वाले यात्रियों को स्कैन करने के लिए किया गया था और स्कैन करने के बाद ही लोगों को जाने दिया गया था।

अब इस थर्मल स्कैनर में कुछ वास्तविक समस्याएं हैं और इन समस्याओं के बारे में जानने के लिए मेरे साथ यहां थर्मल स्कैनर विशेषज्ञ श्री आशुतोष मित्तल जी हैं, जो थर्मल स्कैनर्स बनाने वाली कंपनी गिब्सन के मालिक हैं।आओ थर्मल स्कैनर के बारे में उनके क्या विचार हैं जोकि जनवरी के बाद उस समय से हवाई अड्डों पर उपयोग किये जा रहे हैं। यह सुनें,

आशुतोष जी मेरे पास आपकी कंपनी में निर्मित यह थर्मामीटर है। जनवरी / फरवरी में जब मैं मलेशिया से वापस आ रहा था, एयरपोर्ट पर इस तरह के थर्मामीटर का इस्तेमाल स्कैनिंग के लिए किया जाता था। मैं जानना चाहता हूं कि यह किस तरह का थर्मामीटर है। और यह आपकी कंपनी द्वारा निर्मित किस उद्देश्य के लिए उपयोग किया जाता है। यह मैं समझ सकता हूं कि यह मानव शरीर के तापमान को मापने के लिए है और यह एक औद्योगिक उद्देश्य के लिए है। लेकिन क्या इस औद्योगिक थर्मल स्कैनर का उपयोग मानव को मापने के लिए किया जा सकता है? नहीं, डॉ। साब यह इंडस्ट्रियल थर्मामीटर है। इस थर्मामीटर की माप सीमा 50 डिग्री सेल्सियस से 550 डिग्री सेल्सियस है। अगर हम फ़ारेनहाइट में बात करते हैं, तो इसकी सीमा -58 डिग्री से +1022 डिग्री है और भिन्नता 2% +-2 डिग्री फ़ारेनहाइट है जिसका अर्थ है कि 4 डिग्री फ़ारेनहाइट प्लस माइनस इसकी सहिष्णुता है। क्योंकि यह एक औद्योगिक है और यह एक चिकित्सा थर्मामीटर है। मेडिकल थर्मामीटर मानव शरीर की सतह से तापमान लेने के बाद एक गणना करता है। लेकिन यह औद्योगिक थर्मामीटर इस गणना का उपयोग नहीं करता है और 10 डिग्री तक भिन्नता दिखा सकता है। जिसका मतलब है कि यह 99 डिग्री का तापमान 89 डिग्री या 109 डिग्री दिखा सकता है।

यह औद्योगिक थर्मामीटर है और तापमान को मापने के लिए इन थर्मामीटर का उपयोग करना पूरी तरह से व्यर्थ कार्य है। लेकिन मैंने देखा कि हवाई अड्डों पर और हमारे मौहल्लों में भी इन औद्योगिक थर्मामीटरों का उपयोग किया जा रहा था। तो इसका मतलब है कि यह बेकार था! वास्तव में जनवरी / फरवरी में जब कोरोना शुरू हुआ था, तब इन इन्फ्रा रेड या मेडिकल थर्मामीटर को भारत के बाहर से निर्यात किया गया था और जब तापमान मापने के लिए भारत में दिशा-निर्देश प्राप्त हुए थे तो ये उपलब्ध नहीं थे और केवल औद्योगिक थर्मामीटर उपलब्ध थे और लोगों को इसके बारे में अधिक जानकारी नहीं थी। इन औद्योगिक थर्मामीटर का अनजाने में इस्तेमाल किया। इसका उपयोग उच्च तापमान की जांच के लिए नहीं किया जा सकता है। इसका मतलब है कि जनवरी, फरवरी और मार्च के महीने में इस थर्मामीटर के साथ हवाई अड्डों पर किए गए स्कैनिंग की पूरी कवायद बेकार या पूरी तरह से निरर्थक थी। वह औद्योगिक थर्मल स्कैनर से लोगों पर किए गए स्कैन व्यर्थ हैं। मेडिकल थर्मामीटर का इस्तेमाल करने वाले लोग सही हो सकते हैं लेकिन मेडिकल थर्मामीटर में भी यह समस्या थी कि इस मेडिकल थर्मामीटर की दूरी 125 सेमी है। अलग-अलग निर्माताओं की अलग-अलग दूरी है और यह कहता है कि 125 सेंटीमीटर का मतलब है कि यह दूरी करीब होनी चाहिए,

लेकिन जैसा कि हमने इसे टेलीविजन में देखा या वीडियो माप से जांच किया गया। इस दूरी से यह सही माप नहीं देगा क्योंकि दूरी 125 सेमी होनी चाहिए। आपका मतलब है कि जब तापमान मापा गया था और यदि आपको याद है कि यह इस से किया गया था तो यह सही तस्वीर नहीं देगा और कम होगा जो कि फिर से फ्यूटल है। इसका मतलब है कि जब यह (इंडस्ट्रियल थर्मामीटर) इस्तेमाल किया गया था, तो यह बिल्कुल व्यर्थ था और मेडिकल थर्मामीटर का उपयोग करने में दूरी काफी दूर थी, जिसके परिणामस्वरूप फिर से कम माप हुआ और 125 सेमी की दूरी को बनाए नहीं रखा गया और इसे दूर से मापा गया, जिसके परिणामस्वरूप तापमान में अंतर होगा।

आपने अभी सुना है कि कोरोना रोगियों को रोकने के लिए थर्मल स्कैनर के माध्यम से स्कैन करने की रणनीति पूरी तरह से विफल रही। जिसका अर्थ है कि जनवरी फरवरी से लॉकडाउन से पहले और मार्च के अंत तक ये कोरोना वायरस वाहक दुनिया भर से देश में आते रहे और पूरे देश में फैल गए। हालांकि हम काफी सतर्क थे लेकिन फिर भी वे देश में फैल गए। आज लॉकडाउन के इस बिंदु पर यह स्पष्ट है कि ये कोरोना वायरस वाहक हैं न कि कोरोना के मरीज, जो स्वयं इसके बारे में अनभिज्ञ हैं जो पूरे देश में फैले हुए हैं। अब इस काल्पनिक स्थिति को लें कि मैं एक कोरोना वायरस वाहक हूं

और लॉकडाउन के बावजूद मुझे 3-4 घंटे ब्रेक के दौरान सब्जियों और फलों को खरीदने की अनुमति है। मैं इस आम को लेता हूं और इसे पकड़ता हूं और मुझे यह पसंद नहीं है इसलिए इसे वापस रख देता हूं फिर मैं कुछ आम खरीदता हूं जब मैं आम को वापस रखता हूं जो मुझे पसंद नहीं था। मैं कोरोना वायरस का वाहक हूं और इसका शिकार या रोगी नहीं। तो क्या यह आम कोरोना वायरस से संक्रमित है। हाँ यह है! अब एक और स्वस्थ व्यक्ति भी आम की खरीदारी करने के लिए वहाँ आया है और इस संक्रमित आम को अनजाने में खरीदता है जिसका अर्थ है कि कोरोना वायरस उसके घर तक पहुँच गया है। मैं यह कहना चाहता हूं कि लॉकडाउन के बावजूद कोरोना वायरस फैल रहा है और भारत जैसे देश में इसके प्रसार को रोकना संभव नहीं है। भारत की जनसंख्या 140 करोड़ है और इसमें लगभग 15 लाख का पुलिस बल है और इन पुलिसकर्मियों की अच्छी खासी संख्या वीआईपी सुरक्षा और अन्य कार्यों में लगी हुई है। सीमित संख्या में पुलिसकर्मियों के साथ 140 करोड़ की भारतीय आबादी को घरों के अंदर बंद रखना लगभग असंभव है। और जो भी tits और bits आप टीवी पर देख रहे हैं और आपके आस-पास पूरे देश को विस्तारित और सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता है। तो मेरे हिसाब से कोरोना वायरस पूरे देश में फैल गया है। और अगर इसका प्रसार हुआ है तो यह एक अच्छी खबर है

क्योंकि इसका मतलब होगा कि भारत ने "Herd immunity" हासिल की है। आप यह भी देख सकते हैं कि भारत में कोरोना मौतें 360 हैं। 140 करोड़ के देश में 360 मौतें एक मामूली संख्या है। और ये 360 मौतें हैं कोरोना की हैं या नहीं यह भी प्रश्न योग्य है।

जैसा कि मैंने अपने पिछले वीडियो में बताया था कि कोरोना वायरस जांच के लिए RTPCR परीक्षण संदिग्ध है और विश्वसनीय परीक्षण नहीं है। दूसरा मैंने यह भी समझाया कि रोगी को संगरोध (Quarantine) में रखने के बाद कोरोना का उपचार, उपचार के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाइयाँ मौतों का बहुत बड़ा कारण है ऐसा सबूत कहते हैं ... इसलिए भले ही मरीज की मृत्यु कोरोना वायरस से हुई हो, लेकिन यह संख्या सिर्फ 360 है, लेकिन सच तो यह है कि अगर वे कोरोना वायरस से मर गए या इलाज के कारण या अन्य चिकित्सकीय जटिलताओं के कारण सुनिश्चित नहीं हो सकते हैं। लेकिन कुल मिलाकर संख्या बहुत कम है। क्योंकि भारत ने "Herd immunity" हासिल की है, इसलिए हमें कोरोना वायरस के साथ बीमार पड़ने के बारे में ज्यादा चिंता करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि कोरोना की संचरण दर 2% और मृत्यु दर 0.1% है जो किसी अन्य फ्लू की तरह है। अब मेरे पास आपके लिए एक प्रश्न है। कल्पना कीजिए कि यह 0.1% की मृत्यु दर के साथ कोरोना वायरस है

जिसका मतलब है कि कोरोना वायरस से प्रभावित 1000 लोगों में से केवल 1 ही इस वायरस से मर जाएगा और 999 लोग ठीक हो जाएंगे और इसकी संचरण दर 2.2% है, जिसका अर्थ है कि 1 व्यक्ति 2 लोगों को और संक्रमित करेगा। कल्पना कीजिए कि भारत या दुनिया में कहीं भी एक और स्थिति है जहाँ एक और वायरस या बैक्टीरिया कोरोना की तुलना में कई गुना अधिक मजबूत और घातक है जिसका अर्थ है संक्रामक एजेंट जिसका संचरण दर 10 है यानी एक संक्रमित व्यक्ति से 10 लोग तक फैल जाएगा कोरोना वायरस से 5 गुना अधिक मजबूत और जिनकी मृत्यु दर कोरोना से 20 गुना अधिक है। एक वायरस जो एक साल में 5 लाख लोगों को या हर मिनट 1 व्यक्ति को मार सकता है! अगर हमारे देश में इस तरह का बैक्टीरिया या वायरस आ जाए तो ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए? आप यह सुझाव देंगे कि जब हम कोरोना के लिए Quarantine कर रहे हैं तो यह स्पष्ट है कि वायरस या बैक्टीरिया के मामले में भी हमें अपने घरों में खुद को बंद कर लेना चाहिए और जब तक यह निहित है या मर जाता है या चले जाता है तब तक लॉकडाउन होना चाहिए। मैं यहां आपको बताना चाहूंगा कि इस मामले में यह एक बैक्टीरिया है और यह बीमारी तपेदिक है। बहुत दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि हर साल 4-5 लाख लोग तपेदिक के कारण मरते हैं। लगभग 1 व्यक्ति हर मिनट मरता है। जिसका मतलब है कि जब आप इस दृश्य को देखते हैं

कि जब आप इस दृश्य को देखते हैं तो तपेदिक के कारण 10 लोगों की जान चली जाती है। तो मेरा प्रश्न आपसे जिसका उत्तर आपको मिल गया है क्योंकि मुझे इसका कोई उत्तर नहीं मिला। जिस तरह से कोरोना वायरस के कारण हर मौत की सूचना हर मिनट दी जाती है और टीवी पर प्रकाश डाला जाता है।

इसी प्रकार तपेदिक से मरने वालों की संख्या प्रति दिन १००० है जोकि टीवी पर रिपोर्टेड और हाईलाइट नहीं की गई अब १००१, १००२ ... 5 लाख तक पहुंच गए, तपेदिक से होने वाली मौतों का इतना ऊंचा आंकड़ा टीवी पर प्रसारित क्यों नहीं किया गया। इस प्रश्न का उत्तर मेरे द्वारा नहीं दिया जाएगा! आप इसका उत्तर देंगे ... अब मैं आपसे दूसरा प्रश्न करता हूँ। जब भी कोई मरीज कोरोना वायरस से संक्रमित होता है तो उस मरीज को अलग कर दिया जाता है और उसे एलोपैथिक उपचार दिया जाता है। आपको बता दें कि एलोपैथिक में दी जाने वाली HIV दवा, रेमेडिसविर, जोकि एक प्रायोगिक दवा है, जिसे कभी भी किसी बीमारी या एंटी-रेमरल ड्रग के लिए मंजूरी नहीं दी गई है, इसका कोरोनावायरस से कोई संबंध नहीं है लेकिन फिर भी दी जाती है। दरअसल पिछले 40 वर्षों में यह देखा गया है कि मलेरिया रोधी दवा दिल की धड़कन को असामान्य रूप से बढ़ा देती है

जिससे अचानक हृदय गति रुक जाती है। यह स्पष्ट है कि इस दवा के परिणामस्वरूप दिल का दौरा या कार्डियक अरेस्ट हो सकता है। इसका कोई सबूत नहीं है कि एक कोरोनावायरस रोगी इससे ठीक हो सकता है।

1. एक तरफ इन दवाओं को मरीजों को दिया जा रहा है और दूसरी तरफ आयुर्वेद और होम्योपैथ को अलग रखा जा रहा है। ये 2 शाखाएँ भारतीय संस्कृति का हिस्सा भी हैं और कानूनी भी। लेकिन ऐसे डॉक्टरों को कोरोना रोगियों का इलाज करने की अनुमति नहीं है, मरीजों को दूरी पर रखा जाता है। वे रोकथाम के लिए आयुर्वेद का उपयोग कर रहे हैं। यदि कोई व्यक्ति कोरोनावायरस से पीड़ित पाया जाता है, तो उसके पास एलोपैथी, आयुर्वेद, यूनानी, प्राकृतिक चिकित्सा या होम्योपैथी चुनने का विकल्प होता है। उसके पास कोई विकल्प नहीं है क्योंकि वह गिनी पिग है। उन्हें एलोपैथिक दवाएं दी जाती हैं जिनका कोरोनावायरस से कोई संबंध नहीं है। जब भी कोई आयुर्वेदिक चिकित्सक मरीजों को इलाज के लिए उन्हें सौंपे जाने के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय से संपर्क करता है तो जवाब में उससे सवाल किया जाता है कि क्या उसने कभी कोरोना के मरीज का इलाज किया है। अगर मुझे एक एलोपैथिक डॉक्टर से यही सवाल पूछना होता तो क्या होता। क्या आपके पास कोरोना रोगी का इलाज करने का कोई सबूत है।

उसके पास सबूत भी नहीं हैं और न ही उसने पहले कभी कोरोना रोगी का इलाज किया है लेकिन इस बात के सबूत हैं कि इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवा के परिणामस्वरूप कई लोग हार्ट अटैक या कार्डियक अरेस्ट से प्रभावित हुए हैं। 29 मार्च को 39 वर्षीय, डॉ उत्पल बर्मन, गुवाहाटी के एक वरिष्ठ एनेस्थेटिस्ट ने मलेरिया रोधी दवा लेने के बाद सीने में दर्द की शिकायत की (COVID -19 से एक निवारक उपाय के रूप में), और दिल का दौरा मौत का कारण बना।

2 - किस प्रमाण के आधार पर लोगों को मलेरिया रोधी दवाएं दी जा रही हैं? क्यों आयुर्वेद को महत्व नहीं दिया जा रहा है। तेहरान-ईरान में एक अस्पताल में 200 लोगों का आयुर्वेद के साथ इलाज किया गया और 1 सप्ताह के भीतर 190 लोग ठीक हुए और शेष 10 भी तेजी से ठीक हो रहे हैं। दुनिया के कुछ हिस्सों में एक तरफ आयुर्वेद का इस्तेमाल किया जा रहा है मरीजों का इलाज करते हैं और दूसरी तरफ हमारे देश में मरीजों को आयुर्वेद और होम्योपैथी डॉक्टर से दूर रखा जाता है। ऐसा क्यों ??

प्रश्न 7 - COVID-19 से कैसे बचें ?

यदि आप विज्ञान के साथ हैं तो आपको परेशान होने की आवश्यकता नहीं है ना ही सामान्य सर्दी या फ्लू से डरने की आवश्यकता है। अब आप जानना चाहते हैं कि कोरोनावायरस को कैसे ठीक किया जाए, तो आपको सामान्य सर्दी या फ्लू के प्रोटोकॉल का पालन करना होगा। यदि आप 3 दिनों में इलाज करना चाहते हैं तो आपको 3 Step Diet Protocol का पालन करना होगा।

3 Step Diet Protocol
(1920-2020 के 161 संदर्भ पत्रों पर आधारित)

पहला दिन - आपका बजन / 10

यदि आपका बजन 60 किलो है तो इसे 10 से भाग देने पर 6 प्राप्त होगा मतलब आज आपको 6 गिलास फलों का जूस + 6 गिलास नारियल पानी पीना है

दूसरा दिन - आपका बजन / 20

अर्थात 3 गिलास फलों का जूस + 3 गिलास नारियल पानी तथा भोजन में टमाटर व खीरा (आपका बजन × 5) ग्राम

तीसरा दिन - आपका बजन / 30

मतलब 2 गिलास फलों का जूस + 2 गिलास नारियल पानी तथा भोजन में टमाटर और खीरा (आपका बजन × 5) ग्राम।

आयुर्वेदिक उपचार

नीम की गिलोय, तुलसी के पत्ते, सोंठ, अजवायन, छोटी पीपली, काली मिर्च इन सबका काढ़ा बनाकर सुबह-शाम सेवन करें

किसी भी प्रकार के फ्लू वायरस व ज्वर में लाभकारी

-- (अमर बलिदानी भाई राजीव दीक्षित जी)

Q. - मुंह पर मास्क लगाएं या नहीं ?

मनुष्य शरीर को जीवित रहने के लिए ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है जिसकी आपूर्ति मनुष्य सांस लेकर करता है। परन्तु सांस लेने पर वायुमंडल में उपस्थित अन्य तत्व नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, कार्बन... भी हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं आपने यह अनुभव किया होगा - जिस प्रकार मास्क लगाए बगैर हमारे शरीर में ये तत्व पहुंचते रहते हैं ठीक उसी प्रकार मास्क लगाकर भी निरंतर इन तत्वों की पूर्ति होती रहती है क्योंकि मास्क में छोटे-छोटे छिद्र होते हैं जिनका आकार इन तत्वों की अपेक्षा बड़ा होता है।

मास्क के छिद्रों का आकार मनुष्य के सिर के बालों की अपेक्षा लगभग 5-6 गुना बड़ा होता है यदि सिर के बाल के आकार को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो सिर का बाल लगभग 120000 नैनोमीटर व्यास का होता है अतः मास्क के छिद्रों का आकार लगभग $120000 \times 5 = 6$ लाख नैनोमीटर होगा।
दूसरी ओर कोरोनावायरस का आकार यदि हम चैक करते हैं तो पता लगता है कि कोरोनावायरस का व्यास मात्र 120 नैनोमीटर होता है।

अब आप स्वयं कल्पना कीजिए कि क्या हम 6 लाख नैनोमीटर व्यास के छिद्रों से 120 नैनोमीटर व्यास के वायरस को रोक सकते हैं ??

अतः मेरे अनुसार मास्क केवल व्यापार है तथा मास्क लगाना उतना ही सुरक्षित है जितना पारदर्शी शीशे के पीछे खड़े होकर स्वयं को छिपाना।

- देवेन्द्र यादव स्वदेशी

एक निवेदन -

आपसे विनम्र निवेदन है कृपया स्वयं के अन्दर देशभक्ति की ज्वाला भड़काने हेतु व विदेशी षड्यंत्रों को जानने हेतु अमर बलिदानी भाई राजीव दीक्षित जी के व्याख्यान सुनें।

जय राजीववाद

मेरा हो मन स्वदेशी मेरा हो तन स्वदेशी।
मर जाऊं तो भी होवे मेरा कफन स्वदेशी।।

-- अमर बलिदानी भाई राजीव दीक्षित जी

आपसे विनम्र निवेदन है कृपया इस पुस्तक को प्रिंट करवाकर अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाएं व राष्ट्र निर्माण में सहयोग दें आप चाहें तो पुस्तक के लेखक आदरणीय डॉ विश्वरूप राय चौधरी व भाषानुवादक का नाम हटाकर अपना नाम भी लिख सकते हैं।

अमर बलिदानी भाई राजीव दीक्षित जी के सपनों का भारत बनाने व राजीववादी प्रचारकों से जुड़ने हेतु सम्पर्क कर सकते हैं --

विकास पाटनी राजीववादी (9411565515)
अभिषेक सेठ स्वदेशी (9451497299)
देवेन्द्र यादव स्वदेशी (9927071024)

वन्देमातरम्
भारत माता की जय